अमरकांत

अमरकांत का जन्म 1 जुलाई, 1925 को उत्तर प्रदेश के बलिया जिले के तहसील रसड़ा के नगरा गांव में एक कायस्थ परिवार में हुआ था। उनके पिता का नाम सीताराम वर्मा और माता का नाम अनंती देवी था। अमरकांत ने बलिया के सतीशचंद इंटर कालेज से इंटरमीडियट की पढ़ाई पूरी करने के पश्चात् इलाहाबाद से स्नातक किया। बी.ए. पास करने के बाद पढ़ाई बंद कर दी और नौकरी की तलाश करने लगे। आगरा में दैनिक "सैनिक" में उन्हें नौकरी मिली। वहां तीन वर्ष कार्य करने के बाद ये इलाहाबाद आ गए। इलाहाबाद से उन्होंने "अमृत" पत्रिका में नौकरी की।

अमरकांत का संपूर्ण कथा साहित्य कहानी संग्रह, उपन्यास में विभाजित किया जा सकता है। कहानीकार के रूप में उनकी ख्याति "डिप्टी कलेक्टरी" कहानी से हुई। वे हिंदी साहित्य में प्रेमचंद के बाद यथार्थवादीधारा के प्रमुख कहानीकार थे। यशपाल उन्हें गोर्की कहा करते थे। उनकी कहानियों में निम्न मध्यवर्गीय और निम्नवर्गीय पात्र "कफन" के घीसू-माधव के वंशज हैं। "छिपकली" कहानी में उन्होंने मुख्य रूप से सामान्य वर्ग पर किए जाने वाले शोषण का चित्र प्रस्तुत किया है।

उनकी प्रमुख रचनाएं हैं-

कहानी संग्रह- जिंदगी और जोंक, देश के लोग, मौत का नगर, मित्र मिलन तथा अन्य कहानियां, कुहासा, तूफान, कला प्रेम, प्रतिनिधि कहानियां, दस प्रतिनिधि कहानियां, एक धनी व्यक्ति का बयान, सुख और दुख के साथ, जांच और बच्चे, औरत का क्रोध, अमरकांत की संपूर्ण कहानियां (दो खंडों में) ।

उपन्यास- सूखा पत्ता, काले-उजले दिन, कंटीली राह के फूल, ग्राम सेविका, पराई डाल का पंछी (सुखजीवी), बीच की दीवार, सुन्नर पांडे की पतोह, आकाश पक्षी, इन्हीं हथियारों से, विदा की रात, लहरें।

संस्मरण- कुछ यादें, कुछ बातें; दोस्ती

बाल साहित्य- नेऊर भाई, वानर सेना, खूंटों में दाल है, सुग्गी चाची का गांव, झगरू लाल का फैसला, एक स्त्री का सफर, मंगरी, सच्चा दोस्त, बाबू का फैसला, दो हिम्मती बच्चे।

पुरस्कार और सम्मान- सोवियत लैंड का नेहरू पुरस्कार, उत्तर प्रदेश का हिंदी संस्थान पुरस्कार, मैथिलीशरण गुप्त शिखर पुरस्कार, यशपाल पुरस्कार, जन संस्कृति सम्मान, मध्य प्रदेश का कीर्ति सम्मान, इलाहाबाद विश्वविद्यालय के हिंदी विभाग का सम्मान, साहित्य अकादमी सम्मान, व्यास सम्मान, ज्ञानपीठ पुरस्कार आदि।

17 फरवरी, 2014 को उनका इलाहाबाद में निधन हुआ।